हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2009

04845

एम.एच.डी.-2 : आधुनिक हिन्दी कविता

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : ***सभी** प्रश्न **अनिवार्य** हैं।*

1. निम्नलिखित में से ***किन्हीं तीन*** काव्यांशों की व्याख्या कीजिए : **3x12=36**

(a) मेरे उपवन के हरिण, आज वनचारी,
मैं बाँध न लूँगी तुम्हें, तजो भय भारी।
गिर पड़े दौड़ सौमित्रि प्रिया-पद-तरा में,
वह भींग उठी प्रिय-चरण धरे दृग-जल में।

(b) जनता पर जादू चला राजे के समाज का।
लोकनारियों के लिए रानियाँ आदर्श हुईं।
धर्म का बढ़ावा रहा धोखे से भरा हुआ।
लोहा बजा धर्म पर, सभ्यता के नाम पर।
खून की नदी बही।
आँख-कान मूँदकर जनता ने
डुबकियाँ लीं।
आँख खुली-राजे ने अपनी
रखवाली की।

(c) वह बहुत पहले की बात है
जब कहीं, किसी निर्जन में
आदिम पशुता चीख़ती थी और
सारा नगर चौंक पड़ता था
मगर अब-
अब उसे मालूम है कि कविता
घेराव में
किसी बौखलाये हुए आदमी का
संक्षिप्त एकालाप है

(d) वासना डूबी
शिथिल पल में,
स्नेह काजल में
लिये अद्‌भुत रूप कोमलता
अब गिरा अब गिरा बह अटका हुआ आँसू
सान्ध्य तारक-सा
अतल में।

(e) डूब गयी संध्याएँ, अस्त हुआ इन्द्रधनुष!
लेकिन मैं
पत्थर का शप्त धनुष!
मुझ में से जल अहरह, अनचाहे, अनजाने
तीरों-सा छूट रहा!

2. नवजागरण के संदर्भ में भारतेंदु-युगीन कविता का विश्लेषण कीजिए। 16

अथवा

मैथिली शरण गुप्त की कविता में 'उचित उपदेश का मर्म' से क्या अभिप्राय है? सोदाहरण समझाइए।

3. 'कामायनी' के प्रतीकों का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 16

अथवा

महादेवी के स्वर में वेदना और विद्रोह का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

4. नागार्जुन की कविता में निहित व्यंग्य का विश्लेषण कीजिए। 16

अथवा

'अँधेरे में' की मूल-संवेदना का विवेचन कीजिए।

5. रघुवीर सहाय के काव्य-सौंदर्य का विवेचन कीजिए। 16

अथवा

धूमिल की कविता का वैशिष्ट्य उद्घाटित कीजिए।

- o O o -